

Special Alloy Steel Plants in Kerala

4483. Shri P. Viswambharan:
Shri Mangalathumadam:
Shri P. C. Adichan:

Will the Minister of Steel, Mines and Metals be pleased to state

(a) whether any applications for license to start special steel alloy plants in Kerala are pending with the Central Government, and

(b) if so, the number thereof?

The Minister of State in the Ministry of Steel, Mines and Metals (Shri P. C. Sethi): (a) Yes, Sir

(b) One

12 hrs

PROCEDURE REGARDING SELECTION OF SPEAKERS

प्रकाश चोर शास्त्री (गुण्ड) जन मायबाल जब इस मदन में मध्य प्र. ज. क. का प्रेमी शासन सम्बन्धी एक नाम राता प्रश्न पर बहस चल रही था और उस प्रश्न के उत्तर में सम्बन्ध में जितने बातें जान अपन माय राज्यपाल के पद के शौरव और अध्यक्ष को प्रेषित का म. ने ज. । चर्चा में सम्मेलन जब प्रजा समाजवादी इन के तत्वा में गुरुन्द नाथ द्विवेदा अपना भाग्य कर रहे थे तब आपके इस भागन पर अगजमान तारमभा के उपाध्यक्ष या ब्राह्मण ने यह कहा था कि वह भी नहीं बुलाने में आता है । जब उन्होंने अन्तिम वक्ता के पद का प्रयोग किया तो हमने खर हावर यह कहा कि इस सदन में मतारुद्ध एल. व. का सम्मेलन की दृष्टि से निर्दलाय सदस्य ल. म. व. हैं जो कि चुन कर यहाँ आए हैं । हम को भी जनता ने चुन कर रहा भेजा है, साथ ही एर विशेष विचारधारा का हम प्रतिनिधित्व करते हैं । जिस तरह का श्री खडोलकर का कहना था उससे ऐसा प्रतीत होता था कि वह विरोधी दलों में दरार डालना चाहते हैं । उन्होंने यह कहा कि मुझ का अध्यक्ष यह कह कर गए हैं कि पाटियों के जो वक्ता हैं उन्हीं को बोलने का अवसर दिया जाए और उनके बाद किसी को बोलने का अवसर न दिया जाए ।

जो बात में विशेष रूप से कहना चाहता हूँ वह यह है कि सविधान की मैंने कल से, आज तक अन्तिम पृष्ठ तक उठा कर देखा है यह जानने के लिए क्या उसमें वही गर सदस्यो में भेद किया गया है या नहीं किया गया है ? मैंने कहा कहीं किसी आधार पर कोई भेद किया गया हा, ऐसा नहीं पाया है । मैंने कहीं नहीं देखा है कि लोकसभा की कार्यवाही में कोई सदस्य इस आधार पर भाग ले सकता हो या इस आधार पर भाग न ले सकता हो कि वह पार्टी का सदस्य है या नहीं है । उसके बाद जो तारमभा की प्रक्रिया और कार्य संचालन विधि है उनमें भी एक एक पृष्ठ में मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा है । उसमें भी सदस्यों में किसी प्रा. त. भेद किया गया हो इस प्रकार की कोई व्यवस्था या कोई प्रा. मुझे दिखाई नहीं दी है । एक धारा उसमें भी अवश्य देखी है । लोकसभा की प्रक्रिया की द्वारा दस में यह लिखा हुआ है कि यदि - भा अध्यक्ष अपने आमन पर न हस्ताक्षर करे तो उनका पद यदि उपाध्यक्ष हा अथवा कोई महापति हा जिनका अध्यक्ष ने नामांकन किया हो, उन में से उन्हें वही अधिकार प्राप्त होगा जो अध्यक्ष को प्राप्त है ।

उपाध्यक्ष - जि. समय यह कहा कि वह किसी प्रा. का नहीं बुलाने में आता है उनसे कहा कि जो यहाँ पर इंडीपेंडेंट सदस्य हैं उनके बारे में आपसे जा पहल अध्यक्ष व मरदार बुद्धिमत् उन्होंने सदन के कार्यवाही को नियमित करने के लिए एक परम्परा का प्रारम्भ किया था । परम्परा का प्रारम्भ यह किया था कि जो सदस्य निर्दलीय निर्वाचित होकर आते हैं वे इस सदन की कार्यवाही में भाग लेने के लिए यदि अपना सुप बना ले और अध्यक्ष द्वारा अगर उनको मान्यता दे दी जाए तो उनको कार्य चलाने में बड़ी सुविधा होगी । इसी आधार पर आपने जो निर्दलीय सदस्य यहाँ इस सदन के हैं उनमें कुछ सुप का मान्यता दी हुई है । इस आधार पर हमने अपने सुप की ओर से भी नाम दिया था और कहा था,

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

कि इस बहुत से भाग लेने के लिए हमारे प्रतिनिधि को भी धन्यवाद दिया जाए। लेकिन उपाध्यक्ष श्री जाधवकर न जिस दस धारा का मैंने उल्लेख किया है जिसमें यह व्यवस्था है कि उस समय जो भी आपके शासन पर होंगे उनको वही अधिकार प्राप्त होंगे जो आपको है यह कहा कि अध्यक्ष महोदय मुझ को यह कह कर गए हैं कि सुन्दर नाथ द्विवेदी व गद योग किता को न बुलाया जाए। अब उनसे उन कथन से या तो यह प्रतीत होता था कि या तो वह धन अधिकारी या उपाध्यक्ष नहीं करना चाहते हैं और उनका मध्य प्रदेश व कानपुर शासन और वहां व राज्यपाल व निगम का आलाचना करना पना नही है अब कि यह प्रतीत होता था कि आप उपाध्यक्ष के अधिकार का सम्मान कर दिया है और इस शासन पर वे उपाध्यक्ष का प्रयोग नहीं कर सकते।

मैं इस दावा न करने नही वात्कि इस सदन के पास 1941, 1942, 1943 मन्दा न मिल कर आपको एन पत्र दिया है कि आप भविष्य व लिए एन पत्रों का निर्धारित कर लानि हमारे उन अधिकारी या जो कि एक ससद सदस्य के नाते भविष्य के द्वारा हमें प्राप्त है, हमने न हो सके और हमारे अधिकार का रखा हो सके। आज आप ऐसा व्यवस्था द जिससे भविष्य में इस प्रकार की परम्परा का प्रारम्भ न हो व्यवस्था मैं कि उस बात का या कहना चाहता हूँ जो बात पचास सदस्यों ने अपने पत्र की प्रतिम पत्रिनी में कही है कि अगर उपाध्यक्ष का यही व्यवहार आगे के लिए भी चलगा तो हम को विवश होकर के अधिकार का प्रस्ताव करने विरुद्ध माना पड़ेगा।

श्री नाथ बाई (राजापुर) शास्त्री जी ने जो कुछ कहा है उसका हम लागू पूरी तरह से सम्मन करते हैं।

Shri Tenneti Viswanatham (Visakhapatnam) Mr. Speaker, Sir, I have

come from a constituency which is equal to any other constituency that is represented here in the Lok Sabha.

Mr. Speaker: I suppose, you are speaking on behalf of yourself and Shri Kunte because both of you have written to me together.

Shri Tenneti Viswanatham: Kindly excuse us at least on this occasion. Let us speak.

I have been in legislatures since 1937 and I have never heard about a party being recognised and a party not being recognised. As a matter of fact I was also returned on a party ticket but my party happens to be very small and I happen to be the only representative.

Shri Mahant Digvijay Nath (Gorakhpur): So am I.

Shri Tenneti Viswanatham: Good people are elected only like that.

What I am submitting is, whether we have joined a party or not, whether we have got a big party or not, our constituencies should be represented equally and they should get the same hearing. But here some precedent has been laid down and you were pleased to say that some parties were recognised and others were not recognised. Not only that, my party's name is also removed here and I am called an independent. I have no objection to being called an independent for certain purposes, but opportunity must be given to all, as Shri Shastri has said.

Mr. Speaker: All the 522?

Shri Tenneti Viswanatham: No. There is something called equality of opportunity. If equality of opportunity is a constitutional and democratic right, the rules should be so made and interpreted and the regulation must be so made that all of us get a fair and equal opportunity. I never claim that on every occasion I stand I must be called and I must

have the right of speech for 20 minutes, but what I say is that having regard to the considerations of time and the regulation of debate, you must be pleased to give us an opportunity That is all that I claim. If that is not done and if the rules do not permit it, the rules require to be changed.

Mr. Speaker: There is no rule coming in your way

Shri Tenneti Viswanatham: There is no rule. But this distinction between recognised parties and unrecognised parties is bothering my mind. We do not get a complete set of the proceedings also although we have formed into a group. We require these things whether we are recognised or not. The point is that all must have equal recognition and equal and fair opportunity must be given to all. The power to regulate the proceedings is not the power to deny opportunities

Mr. Speaker: What you had wanted to say, you have said. Now you are discussing it on merits

Shri Tenneti Vishwanatham: If I am troubling you, I will sit down

Mr. Speaker: I only request you to conclude

Shri Tenneti Viswanatham: You seem to have understood my mind even before I had expressed myself.

Mr. Speaker: I understood it even before you got up.

Shri Tenneti Viswanatham: As you have understood it earlier than I expressed it, kindly do what I have in mind

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) :
अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो कुछ कहा है, मैं उस को सपोर्ट करता हूँ। कल उनके साथ बड़ी ज्यादती हुई है।

Mr. Speaker: They wrote to me and that is why I have allowed them. If

everybody speaks, then there will be no end to it.

Shri Dattatraya Kunte (Kolaba):
Mr Speaker, Sir.

Mr. Speaker: Mr. Viswanatham and Mr. Kunte wrote to me and I allowed Mr. Viswanatham to have his say. Do you also want to say the same thing? That is exactly my difficulty.

Shri Dattatraya Kunte: I am really surprised to find that I am creating any difficulty for you.

Mr. Speaker: No difficulty. Mr. Prakash Vir Shastri and some other Members wrote to me about this and I allowed Mr. Prakash Vir Shastri to raise the question. You two also wrote to me and I allowed Mr. Viswanatham to speak.

Shri Dattatraya Kunte: Kindly have a little patience with me.

Mr. Speaker: All right.

Shri Dattatraya Kunte: I am grateful to you, Sir.

Sir, yesterday, when the adjournment motion was being discussed, as a matter of fact, I was one of the early ones who sent in their names. The practice in this House is that anyone who wants to speak should send in his name

Shri Randhir Singh (Rohtak): I also sent my name but I was not called

Shri Nath Pal: You were rightly not called.

Shri Dattatraya Kunte: After I sent in my name, I waited for an opportunity to speak. When Shri Surendranath Dwivedy was called and it was indicated that he was going to be the last speaker, we had to get up and ask the Chair whether we would at all get any opportunity. He did not

[Shri Dattatraya Kunte]

indicate that it was because of want of time that he was not going to call us. If that was the ground on which he was not going to call us, we would not have been able to say anything. But he said—I have not got a copy of the proceedings, I wanted to get it from the Table Office but could not get it, I am depending on my memory—that as that was a censure motion, only the leaders of the recognised groups would be allowed and that as ours was not a recognised group and, therefore, we will not get an opportunity. I pointed out to the Chair that I also belonged to a group. He said that ours was not a recognised group and, therefore, he was sorry that we will not get an opportunity to speak.

He further indicated that he was acting under your instructions. This pained me much more because I do not see, as my friend Shri Prakash Vir Shastri pointed out, anywhere, either in the Constitution or in the Rules of Procedure any such thing.

Mr. Speaker: That is all.

Shri Dattatraya Kunte: This has got to be explained to the House. The House does not know in what predicament we are. The biggest group in this House does not contain 53 Members and, therefore, it is not recognised as a party. As compared to that, we are more than that in number. If we are not going to get any opportunity even at the fag-end of the discussion.

An hon. Member: Acharya Kripalani was allowed to speak.

Mr. Speaker: Why don't you allow me to hear him?

Shri Dattatraya Kunte: If we are not going to get an opportunity even at the fag-end of the discussion, when an important matter is being discussed, I am really pained to know for what business we are sent to this Parliament. We are sent to this Parliament to parley and if we are not going to parley, what else are we to

do here. I am pained to find in this House that an hon. Member can get up on the excuse, which on the face of it is very flimsy, of raising a point of order and you are pleased to allow him time, as much as he wants to, take. Does the Chair want us to have recourse to that which we would not like to take? Having known the parliamentary practice in this House and in other Houses, men like me and Mr. Viswanatham would not like to resort to that method. As a matter of fact, we do not want to do it.

Mr. Speaker: May I now appeal to him to conclude?

Shri Dattatraya Kunte: I am not taking much time of the House. I am making the position clear. We had to walk out of the House because we were only sorry spectators to what was happening in the House. We cannot take part in the discussions because we are not members of any recognised group. Under these circumstances, what could one do? I pointed out to the Deputy-Speaker who was in the Chair that, as far as the discussions and the demand notices were concerned, our groups were allotted time and we stuck to the time limit. As far as I am concerned, I have never exceeded the time limit which was given.

Mr. Speaker: Please conclude.

Shri Dattatraya Kunte: I am afraid, wrong methods are practised. One is not even allowed to make his position very clear. Under these circumstances, what could I do? Do I raise a point of order? Do I shout? Do I create an opportunity for being named and somebody pleading for me and all that? I do not want to do that. Under these circumstances, it is only the Chair who can protect us and yesterday we sought that protection. I am raising this because yesterday was not the first time when I got up many a time and an opportunity was denied to me. In this case, what do we find? The rule is that an adjourn-

ment motion shall be discussed for at least 2½ hours. It is not that it will be put at such and such a time. If I found in this House that we were very strict as regards our time punctuality, etc., I would have stood by that. But I find that when it pleases some people, the time could be extended. I told the Deputy-Speaker that I would require not more than five minutes, but he could not spare even five minutes. I am really pained to raise this matter. I want to know whether the one million people who have elected me to this House have elected me to sit here like this. Does the Constitution want an independent member not to come to this House? In that case, we can as well amend the Constitution that way. I do not want to raise this as a matter of privilege or anything. I think, every elected independent member of this House has the right and authority to be heard, and an opportunity should be given to him. Yesterday we felt that this opportunity was denied to us and it was done on the floor of the House. I would, therefore, request you to clarify this on the floor of this House and it should further be seen that we are given an opportunity not merely in theory but also in reality.

Shri Frank Anthony (Nominated—Anglo-Indians) Just two minutes

Mr. Speaker: No no. Will he kindly sit down? Those who wrote to me and sought the permission, I have asked them to explain. If a general discussion begins like this, where will it lead us? He has not given me notice. If I allow him, then I have to allow a large number of Members.

Shri Frank Anthony. I seek your indulgence. I am speaking on behalf of 16 independents.

Mr. Speaker: He should have written to me. He should have given me notice.

Shri Frank Anthony: Mr. Kunte spoke to me...

Mr. Speaker: How can I allow? His name is not here.

Shri Frank Anthony: I will take only two minutes.

Mr. Speaker. It is very unfortunate. How could I allow him?

Shri Frank Anthony: I am only entering into a plea with you.

Mr. Speaker: Why did he not give notice?

Shri Frank Anthony. I am only entering into a plea with you for recognition of past practices that have hardened into conventions. I am not questioning your discretion in the matter. May I just tell you very respectfully what the practice used to be? And I say it with great respect. Unfortunately, now, rigidly, you are pleased to come down in a certain direction every day in the same way. I have had the privilege of sitting in this House for the last twenty-five years, when I sat here as unattached, the Speakers in those days, from Shri Mavalankar's time and even before that called Members according to their discretion if they felt that the Members had a contribution to make.

Mr. Speaker: May I appeal to him to sit down now?

Shri Frank Anthony. Dr. Kuners and myself as unattached independents were called to initiate debates. Then, your predecessor had told us already that so far as

Mr. Speaker: That has got to be verified. I shall look into the records.

Shri Frank Anthony: We were asked to organise ourselves into groups and then we were given time according to our numerical strength. You are pleased to supersede now even that.

Shri H. P. Chatterjee (Krishnagar): My name is there. May I also make my submission?

Mr. Speaker: To which group does belong?

Shri H. P. Chatterjee: I am an independent and I sit with the progressive group. My name is also there.

Mr. Speaker: I know that he is an independent but he belongs to the progressive group. That is the difficulty. It is an independent group. Everybody is independent and everybody wants to speak.

Shri H. P. Chatterjee: You hold certain views but we hold certain different views. So, we should be allowed to have our say.

Mr. Speaker: When I could not control Shri Frank Anthony, how can I deal with the hon. Member?

Shri H. P. Chatterjee: Sir, your rulings should be constitutional rulings. Your rulings should be judicial rulings. Anything whimsical cannot be your ruling. We cannot accept any such thing. You must give a judicial ruling always. Nowhere is it said in the Constitution that independent Members should be differentiated from party Members. We have had enough of this party affair and we are seeing what they are doing in India. Men like Mahatma Gandhi and men like Acharya Vinoba Bhave have asked us to remain independent. I was in the Congress for thirty years and then I left the Congress, seeing the state into which Congress had brought this country.

Mr. Speaker: That was his own decision and not mine.

Shri H. P. Chatterjee: I am an independent and I shall always remain an Independent. My constituency has sent me here knowing that I am an independent. I have defeated many stalwart Congressmen. So,

should I not have my say here? But I find that you always gag Independents in this manner.

Your predecessor Sardar Hukam Singh gave me once time even unasked for. But now I am a backbencher and you are not allowing us to say anything important because we are independents. This is unconstitutional, arbitrary and undemocratic.

Shri Khadlikar (Khed): Immediately after the debate was over, because of want of time ...

Shri Ranbir Singh: Why should he explain now?

Shri Khadlikar: I shall just utter two sentences only. For want of time I could not accommodate them and I called the hon. Minister. Three of those Members were standing throughout but I could not accommodate them. I am very sorry. One hon. Member asked me what one could do. It was already eight o'clock when I called the hon. Minister.

श्री प्रकाशचोर शास्त्री : सट है, गलत है। इन्होंने यह कहा था कि स्पीकर यह कह कर गये हैं कि पार्टी के प्रस्ताव किसी को न बुलाया जाय। अभी रिकार्ड मेरे पास नहीं है, लेकिन प्राप्टेन्सिबल देखें। डिप्टी स्पीकर हों तब इस तरह का झूठ बोलना बिल्कुल गलत बात है। सारा हाउस इस बात का गवाह है।

Mr. Speaker: Will he kindly sit down?

श्री प्रकाशचोर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, प्राप अपना रिकार्ड मंगा कर देखें।

Shri K. Narayana Rao (Bobbili): May I make a submission? ...

Mr. Speaker: Is he an independent? Let him kindly sit down. Is he also an independent to plead their cause?

It has been said that the Deputy-Speaker had not called them. On a previous occasion, we had once called

Shri Frank Anthony; on the question of privy purses, Shri N. C. Chatterjee had spoken, and Shri Prakash Vir Shastri himself had also spoken. Whenever there was time they were accommodated. Yesterday also, Shri J. B. Kripalani spoke. Was it on the basis of any party? But the difficulty comes in ...

Shri Digvijai Nath: I was given only two minutes once.

Mr. Speaker: I know that. My difficulty is this. There are about 57 or 60 independents. Mahant Digvijai Nath came to me once and said that he was backed by a party which was big outside. He did come and say that to me that the Hindu Mahasabha was a big party outside but it had no representatives here.

An hon. Member: A big party?

Mr. Speaker: He says that it is a big party outside. The hon. Member may or may not agree with its views and so on. But he says that he is backed by a party outside but there are not enough Members here representing that party. For instance, there is the Muslim League.

Shri Mahant Digvijai Nath: The Hindus should be allowed to place their viewpoint.

Mr. Speaker: Therefore, Mahantji must be satisfied that many Hindus have spoken. Shri Muhammad Ismail comes to me and says that 'My party is a recognised party outside'. There are three Members of the Muslim League Party here. But they do not belong to any Group. He says, 'Why don't you give us a chance? We are also Independents'. I give them a chance once in a way on one or two Demands—like that. There are 57 Independents, forgetting the Groups.

Shri Frank Anthony: We were asked to form Groups.

Mr. Speaker: They have formed into new Groups. That is a different

matter. Independents are not totally ignored. Shri Prakash Vir Shastri was called, Shri N. C. Chatterjee has been called, Shri Frank Anthony is called, as regards Kripalanji, every-time whenever he wants to speak, he is called.

Shri Nath Pai: That is one of the good things we are doing to hear that veteran.

Mr. Speaker: The Deputy-Speaker when he said that did not mean anything. There was a rush. It was already 8 p.m.

Shri Dattatraya Kunte: No, Sir.

Mr. Speaker: All right, it was 7.47 to be more correct, if Shri Kunte wants to correct me. He wanted to complete it. Already Shri Kripalani had spoken. There might have been five minutes left and one more Member could have spoken. That is a different matter.

But there is no ban and there is no assurance to be given in advance. It may be Shri Prakash Vir Shastri, it may be Shri Anthony, it may be Shri Viswanatham who may be allowed. (Interruption). My difficulty is that if I allow one or two of them, will that satisfy them? If I allow Shri Kripalani or Shastriji or Shri Anthony or Shri Chatterjee, the difficulty will be there even then. The others will still want to be called. They are not satisfied.

Shri N. C. Chatterjee (Burdwan): I am speaking for the Progressive Group to which Shri Viswanatham, Shri Kunte, Shri Chaudhuri and others belong. May I refer you to Direction No 123 which says—

"An association of members who do not fulfil the condition for recognition as a Parliamentary Party or Group may be granted certain facilities by the Speaker, if such a course shall, in his opinion, facilitate the conduct of business in the House."

[Shri N. C. Chatterjee]

Not one Group in the Opposition has got 50 Members in the House. Therefore, all of us come under 123

The only point is that we are told by the Deputy Speaker that the 'Speaker has said that your Group shall not be recognised for the purpose of the facilities given to the other Groups' We want to know whether you have given any such direction Are you making a discrimination between some Groups and other Groups? We have been asked to form Groups and we have done so We maintain and assert that the Speaker has no right to discriminate

Mr. Speaker: No further discussion on this It is true that parties which are meagrely represented here have a big standing outside But if on that account, I have to treat them on a par with the other parties represented here, it will be difficult I will have to stretch my imagination too far to place them on a par with the other parties I have given them chance off and on They have not been denied these facilities But if each one of them wants a chance, the difficulty comes how to accommodate all If out of the Independents, two or three are accommodated I can understand it But is it possible to give chance to one and all?

Shri H. P. Chatterjee: We have our right to participate in the debates here and we shall send our names to you Nobody can prevent us from doing that

Mr. Speaker: We shall continue with the Demands for Grants now We have got 1 hour and 15 minutes

Shri Hem Barua (Mangaldai) Before you proceed, may I say this? You just now said that those hon Members had written to you and therefore, you have allowed them an opportunity to speak But yesterday, I also wrote to you to inquire into the conduct of the Deputy-Speaker. I do not mean anything personal against

him, but there are certain things that are to be inquired into in regard to his conduct

Mr. Speaker: This is not fair to the House

Shri Hem Barua You did not allow me to say a word and you dismissed it altogether I did not raise it.

As a matter of fact, it is high time this was done Every section of the House is agreed that the conduct of the Deputy-Speaker should be probed into

Mr. Speaker: This should not be allowed It is not proper I am sorry for it

Shri H. N. Mukerjee rose—

Mr. Speaker. We have 1 hour and 15 minutes left How long will the Minister require?

The Minister of Industrial Development and Company Affairs (Shri F. A. Ahmed): One hour

Mr. Speaker: One hour? I thought we could accommodate two more speakers I will call him at 2.15 and he might take about 40 minutes

Shri F. A. Ahmed: Yes

Mr. Speaker. Because today from 3 O' Clock we take up non-official business, and tomorrow is the only day left for the budget I thought at least one more demand could be discussed tomorrow If you take a long time now, it will extend tomorrow also So, I will call the Minister at 2.15 after lunch, and he will take about 40, 45 minutes We will finish the demand at 3, and take up non-official work.

Shri H. N. Mukerjee (Calcutta North East) Can I make a one-minute submission?

I have heard this morning things being allowed to be said by some people in the House You have in-

finite patience, but what I hate is the idea of discussing things here in the forum of Parliament rather than with you in your chamber. I have heard a remark from Mr Hem Barua that the conduct of the Deputy Speaker should be probed into. It may be the conduct of the Deputy Speaker is good, bad or indifferent, but is it right, is it fair, is it proper, is it honest, is it just, to say that kind of thing about a person who is a dignitary of the House. Till we have pushed him out we have no business to speak in this manner. Please make some observation in regard to the propriety of conduct inside the House by people on this side of the House as well as on that side.

Shri Hem Barua: On a point of personal explanation. When I said like that I had reasons for saying that, and I want the dignity of the House to be maintained. What has pained me is that the Deputy Speaker when he is in the Chair, makes comments and betrays a partisan attitude.

Mr Speaker: Shrimati Kripalam

12.32 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS—Contd
MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT
AND COMPANY AFFAIRS—contd

Shrimati Sucheta Kripalanj (Gonda): Thank you very much for giving me an opportunity to speak particularly when there is such a scramble for time.

The Ministry of Industrial Development, after reorganisation, holds a very crucial position in the development of industries of this country, because it is responsible for promotion of industrialisation, for planning, for development and control and assistance to industries as well as for the formulation of general industrial policies and various other things. Therefore, this ministry is in a position now, if it has a pragmatic

approach, to formulate prudent policies and implement them to take this country out of the economic depression in which it is finding itself.

From all accounts, the industrial situation in this country at the moment is very serious. The report of the ministry while acknowledging this says that mainly the blame is on the two years of drought. I do admit that the agro-based industries have suffered on account of the drought. There is a serious situation in the sugar industry, textile industry and various other industries, and may be in other ancillary industries. But to blame mainly the drought for the depression would be very incorrect. Our policies have not been correct; there have been defects in implementation, lack of co-ordination, lack of rapport between the Government and the industrial interests. These are some of the reasons. I should say they are the more grave reasons for the depression in industry that we see today.

Let us take, for instance, the credit policy to which Mr Desai also made a reference as also other members before me. The credit squeeze was imposed to remove pressure from prices, but in actual fact what was the effect? It starved the industry, it retarded production; it did not achieve the objective for which it was done. The idea was that speculation and cornering should be stopped, but speculation and cornering could be stopped. Perhaps it could have been handled by some other method. Government have other means. For instance, the Forward Markets Commission could have done something.

Why was it that we failed in our objective? We failed in our objective because there is too much black money all over. Attempts have been made year after year to control black money, but we have not succeeded. Therefore, we have now to see that we take some drastic steps to see how this underground money can be